अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महातपस्वी के ज्योतिचरण को रोकने में सूर्य का प्रखर आतप भी नाकाम

-केरल की धरती पर निरंतर गतिमान हैं महातपस्वी महाश्रमण

-एक दिन में दो-दो विहार के बाद भी आचार्यश्री भक्तों को कर रहें हैं निहाल

-लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे वडाकेनचेरी स्थित सेल्वम आॅडिटोरियम

-स्वयं के द्वारा स्वयं को जीतने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

23.02.2019 वडाकेनचेरी, पालाक्कड (केरल): अपनी अहिंसा यात्रा के साथ भारत के सोलहवें राज्य के रूप में केरल की धरती को पावन बनाने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी जन-जन के मानस को पावन बनाने के लिए निरंतर गतिमान हैं। फरवरी महीने में ही केरल में तपता आसमान का सूर्य मानों पूरी धरती को तवे के समान गर्म दे रहा है, इसके बावजूद दृढ़ संकल्पी अखण्ड परिव्राजक के ज्योतिचरण को थामने में नाकाम साबित हो रहा है। आचार्यश्री केरल की धरती पर प्रातःकालीन विहार के साथ ही सान्ध्यकालीन विहार भी कर रहे हैं। केरल की धरती जहां फरवरी महीने में ही तापमान 37 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंचने लगा है। ऐसे में स्थानीय लोग भी जहां धूप में निकलने कतरा रहे हैं, वैसे आतप में महातपस्वी अपनी धवल सेना का कुशल नेतृत्व करते हुए निरंतर जनोद्धार कर रहे हैं। धरती के इस महासूर्य ने मानों आसमान के सूर्य के आतप को नगण्य-सा कर दिया है।

शनिवार को अलथुर स्थित बी.एस.एस. गुरुकुलम हायर सेकेण्ड्री स्कूल से आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते गतिमान हुए तो उस समय से ही सूर्य अपनी पूर्ण तीव्रता के साथ आकाश मार्ग पर आगे बढ़ रहा था। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-544 पर जैसे-जैसे महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी गंतव्य की ओर बढ़ते जा रहे थे, सूर्य की किरणें पूरे राजमार्ग को तप्त बना रही थीं। लोग पसीने से तर-बतर हो रहे थे। इसके बावजूद समताभावी आचार्यश्री निर्विकार भाव से गतिमान थे। लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पालाक्कड़ जिले के वडाकेनचेरी गांव स्थित सेल्वम आॅडोटोरियम में पधारे।

आॅडोटोरियम हाॅल में आयोजित मंगल प्रवचन में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में यदा-कदा युद्ध की बात भी चलती है। प्राचीनकाल में भी युद्ध होता था। रामायण में भी युद्ध का प्रसंग आता है। योद्धाओं में कितना साहस, समर्पण, श्रद्धा और निष्ठा का भाव होता है, जिसके कारण वे युद्ध करते-करते वीरगति को भी प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु युद्ध से पीछे नहीं हटते। युद्ध से भाग जाने वाला कमजोर, डरपोक होता है। विजयश्री का वरण कर लेना तो मानों युद्ध का प्रतिफल ही प्राप्त हो जाता है। युद्ध लड़कर वीरगति को प्राप्त होने वाला भी यश को प्राप्त करता है। भगोड़ा होना कमजोरी की बात होती है। इसलिए कहा गया कि युद्ध करने वाला यदि जीत गया तो लक्ष्मी की प्राप्ति वीरगति को प्राप्त हुआ तो स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जहां परिग्रह और कुछ पाने की भावना हो वहां किसी रूप में हिंसा की बात आ जाती है। जहां अपरिग्रह की भावना हो, वहां अहिंसा की स्थापना हो जाती है। यह बातें तो बाह्य युद्ध की हुईं। धर्मशास्त्र में कहा गया है कि आदमी को स्वयं से लड़ने का प्रयास करना चाहिए और स्वयं पर स्वयं को विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। कषाययुक्त आत्मा से ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी आत्मा से युद्ध करना चाहिए। शुभ योग आत्मा कषाययुक्त आत्मा पर विजय प्राप्त कर सकती है। आदमी अपनी आत्मा के साथ युद्ध एक रणनीति के अनुसार लड़े तो वह स्वयं के द्वारा स्वयं की आत्मा को जीत सकता है और अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है।